भूमिका

वाणीक आराधना ओ श्रम-साधनाक मंगलमय रूप होइछ स्वर्णिम कृति-कौमुदी जे प्रकृति मे किछु तँ सहजा ओ किछु उत्पाद्या होइछ। सहृदयक अन्तराल सँ उद्भूत भए भाव रसक सग एकाकार भए कोनो रचना रूपी कल्प-कुसुमक सर्जना करैछ, जकर सुवास सम्पूर्ण वातावरण के तन्मय कए पाठक-मन पर विजयश्री प्राप्त कए लैछ, मनोरम भाव-सामग्रीक संग मनोवांछित फल प्रदान करैछ।

प्रातः स्मरणीय कोनो साधक-मनीषीक अमृत वाणी 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना:' मे चिरन्तन सत्यक झाँकी-दर्शन होइछ, एहि चरितार्थक शत-प्रतिशत निदर्शन भेटैछ 'व्यवहार' ओ 'कला'क मंजुल समन्वय मे। यथार्थ रूपें दृष्टिगत होइछ जे जीव मात्रहि मे परिवर्तन होइछ — ओ चाहे वैचारिक परिधि के देखल जाए किंवा भौतिकवादी प्रवृत्ति कें, योग कें देखल जाए अथवा भोग कें, रस कें देखल जाए वा गंध कें, संस्कार कें देखल जाए वा संस्कृति कें, व्यवहार कें देखल जाए अथवा अभिरूचि कें, परिवर्तन तिल सँ लए तार धरि, संकीर्ण सँ लए विस्तार धरि, शब्द सँ लए शब्दार्थ धरि, स्वर सँ लए व्यंजन धरि, संज्ञा सँ लए विशेषण धरि विभिन्न रूपमे दृष्टिगोचर होइछ जकर हेतु थीक वातावरण, संस्कार ओ तद्जन्य प्रवृत्ति-विशेष, ला तेँ ने कखनहु ककरो लेखनी सँ निःसृत भए उठैछ कविता कामिनीक सुमधुर रागमय संगीत, तऽ कखनो कथा-पिहानीक रूचिगर रूप, कखनो कोनो भाषाक वैज्ञानिक अनुशीलन-परीक्षणक सम्यक् स्वरूप आ' पुनश्च कखनो ओकर परिष्कृत-परिमार्जित रूप-दृष्टि हेतु व्याकरण ओ विविध रूपक विचार-सृष्टि आ मूलतः इएह ने कोनो रचनाकारक रचनाधर्मिताक वास्तविक चित्र कें प्रतन्वित करैत अछि। मैथिलीभाषा शास्त्र एही मनोभावक प्रतिफलित रूप थीक जाहि मे भाषा ओ एहि सँ सम्बद्ध अनेकानेक वषय एवं तथ्यक परिशीलन कएल गेल अछि। कोनो भाषाक अन्तर्गत यदि कोनो समाजक चित्रक यथावत प्रतिबिम्बित रूप सँ परिपूर्ण मनोरम साहित्य भेटैछ, तऽ ताही संग ओकर परिशुद्धि ओ व्यापकताक प्रामाणिकताक हेतु प्रकृष्ट प्रकरणक कार्य करैछ व्याकरण, आ संग-संग इतिहास ओ लिपि सेहो ओकरहि अनुरूप मंडित-अनुरंजित होइछ। भाषाक इतिहास कोनो भाषाक साहित्यिक तथ्यक ऐतिहासिक क्रमें साक्षी बनैछ तऽ व्याकरण ओकरा सभ्य एवं सुसंस्कृत बनबैछ, आ लिपि अपन दायित्वक निर्वाह एहि रूपें करैछ जे अमुक भाषाक अपनहु कोनो अस्तित्व छैक, अमुक भाषा ककरहु सँ पैंच नहि लेल गेल अछि, सर्वथा निराश्रित अछि कोनो अन्य भाषा सँ, मुदा, कोनो ने कोनो रूपें एक भाषा दोसर भाषा सँ प्रभावित रहिते अछि।

भाषा कें विचार एवं अनुभव कें प्रकाशित करबाक सांकेतिक साधन कहल जा सकैछ। ई भाव-प्रकाशन अनेक रूपें कएल जा सकैछ। उदाहरणार्थ, शरीरक विभिन्न अंगक संचालन द्वारा। 'पातंजलि' अपन 'व्याकरण महाभाष्य' मे एहि पर विचार करैत लिखने छथि—''अक्षि निकोचै: पाणि विहारैश्च' अर्थात्, भाषाक अभिव्यक्ति नेत्रकोरक संकेत एवं हस्त संचालनक माध्यम सँ होइछ।

एहिना कथन अछि—''नेत्रवक्त्र विकारेण दृश्यते हृदयं नृणाम्''—अर्थात् मनुष्यक हृदयगत भावक अभिव्यक्ति नेत्र सँ एवं किछुओ मुँह सँ निःसृत कएला सँ स्पष्ट होइछ। ई थीक भाषाक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

वस्तुतः व्यापक अर्थ मे भाव-प्रकाशनक विभिन्न साधन कें भाषा कहल जा सकैछ। परञ्च, ई साधन तावते धरि प्रयोग मे आनल गेल यावत धरि कि विचार प्रकट करबाक विभिन्न

ध्वनिक आविष्कार नहि भेल छल। शारीरिक अंगक संचालन द्वारा समस्त भावक प्रकटीकरण ठीक ढंग सँ नहि भए पबैत छल। अतएव, ध्वनि-संकेतक सहायता लेल गेल। भाषाक अर्थ यथार्थ रूपें संकेतहि सँ होइछ। किंतु अन्तर एतबे अछि जे ई शारीरिक किंवा आंगिक संकेत नहि भए ध्वन्यात्मक संकेत थीक, मुदा ध्वन्यात्मक संकेतक कोनो सीमा नहि भए सकैछ। एतदतिरिक्त आंगिक संकेतक द्वारा सीमिते भावक स्पष्टीकरण भए सकैछ जे मनुष्य कें सीमित क्षेत्र मे रहबाक हेतु बाध्य करैछ। अपन परम्परागत विचारक अमूल्य निधि कें सुरक्षित रखबाक बात तऽ दूर रहए, हम अपनहि समयक लोकक विचार कें एहि शारीरिक संकेतक द्वारा प्रकट नहि कए सकितहुँ। किन्तु ध्वन्यात्मक संकेत मे ओ क्षमता अछि जे अनन्त काल धरि मानवक कोटि-कोटि मनोभाव कें सुरक्षित रखैत युग-युगान्तर पहुँचबैत रहल। एहि सँ स्पष्ट होइछ जे ध्वन्यात्मक संकेत सएह हमर मनोभाव कें ठीक ढंगे स्पष्ट कए पबैछ। अतएव, विचाराभिव्यक्तिक हेतु समाज द्वारा स्वीकृत जाहि व्यक्त वर्ण ध्वनि-संकेतक प्रयोग होइछ ओकरा भाषा कहल जाइछ।

कहल गेल अछि—'ध्वन्यते अभिव्यज्यते येन असौ ध्वनिः' अर्थात् अभिव्यक्तिक नाम थीक ध्वनि, वाच्यार्थ थीक ध्वनि, व्यङ्ग्यार्थ थीक ध्वनि एवं यत्र-तत्र लक्षणा मे व्यंजना—अभिव्यंजना स्फुटित होइत रहैछ।

प्रख्यात आलोचक स्व० प्रो० रमानाथ झाक कथन थीक—"साहित्यक शरीर थिक भाषा। संवेगात्मक अनुभूति, जकरा साहित्य-शास्त्र मे रसक आख्या कहल गेल अछि, भाषाक माध्यम सँ अभिव्यक्त होइत अछि, ओ तेँ कोनहु साहित्यक इतिहास ओहि भाषाक इतिहास सँ सश्लिष्ट रहैत अछि जाहि भाषा मे ओ साहित्य उपनिबद्ध रहैत अछि। परन्तु भाषाक स्वरूप स्थिर नहि रहैत अछि। विश्वक इतिहास मे संस्कृते टा एहन भाषा अछि जे भगवान् पाणिनि द्वारा 'संस्कृत' भए तेना प्रतिष्ठित भेल अछि जे अद्यापि अपन स्वरूप सब ठाम सब समय मे एक रूपक स्थिर रखने अछि।"—प्रो० झाक ई उक्ति ध्यातव्य थीक जे भाषाक मौलिक तत्व, ओकर निर्माण, स्वरूप ओ महत्ता पर प्रकाश दैत अछि।

भाषाक उद्भव स प्रकृतिक प्रदत्त समस्त मानव-जगत मे अस्तित्व, चेतना ओ प्रतिष्ठाक साम्राज्य स्थापित भेलैक, जीवन मे जीवन-मूल्यक संचार भेलैक। जागतिक विभिन्न प्राणी मे मनुष्य एकमात्र भाषाक ज्ञानक कारणहि सर्वाधिक भाग्यशाली मानल जाइछ। यदि अद्यपर्यन्त भाषाक अभाव बनल रहैत, अर्थात् भाषा नामक निधिक निर्माण नहि भेल रहैत तऽ मानव ओ पशु मे अन्तर स्पष्ट करब असंभव रहैत। भाषा मात्र एक एहन साधन थीक जकर प्रभावें मनुष्य अपन परम्परागत अनुभव, विचार एवं भाव कें सही रूपें प्रकट कए सकैछ। बुद्धि, विवेक, संयम, धैर्य, लगन आदिक शिक्षा ग्रहण करबाक हेतु जीवन मे भाषाक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि।

भाव, विचार एवं अनुभवक विनिमय सँ सामाजिकताक भावनाक विकास होइछ। सामाजिक भावना संगठनक कारण बनैछ तथा संगठन सँ पँच-पँच परिवर्तन होइछ आ' परिवर्तनक प्रतिफलित रूप होइछ विकास। यदि मनुष्यक संगें भाषा नहि होइत, तऽ ओहि मे सामाजिकता नहि होइत, यदि ओहि मे सामाजिकता नहि होइत तऽ ओकरा मे कोनो विकासक गति परिलक्षित नहि होइत आ, तखन ई पशुवत दयनीय दशा मे रहि सर्वत्र ओ सर्वदा तिरस्कृत-अपमानित होइत हेय दृष्टि सँ देखल जाइत। एतबे नहि, प्रत्युत् शरीरें अत्यन्त निर्बल प्राणी होएबाक कारणें मनुष्य पशुओ सँ पाछाँ रहैत। परंच, एहि कल्पना कें निरर्थक करबाक श्रेय भाषा मात्रहि कें छैक। अद्य-पर्यन्त मानव-संस्कृतिक उन्नत अवस्थाक मूल मे भाषाक सर्वश्रेष्ठ स्थान थीक। एही संग एक विषय ध्यातव्य जे भाषा मनुष्यहि मात्रक विचार-विनिमयक साधन नहि अपितु पशु-पक्षी पर्यन्तक मनोभावक अभिव्यक्तिक माध्यम थीक।

भाषा सँ साहित्यक अवान्तर सर्जना होइछ एवं साहित्य सँ कोनो देशक संस्कृतिक मूल्यांकन कएल जाइछ। ओ समाज, जाति किंवा राष्ट्र उन्नतिशील मानल जाइछ जकर साहित्य

समृद्ध ओ उच्च कोटिक अछि। भारतीय-समाज कतबो उच्च छल, कतबो गौरवशाली छल तकर अनुमान एकर उपलब्ध साहित्ये सँ लगाओल जा सकैछ।

हिन्दीक मर्मज्ञ आलोचक डा० श्यामसुन्दर दासक कथन अछि जे साहित्य समाजक दर्पण थीक, अर्थात् सामाजिक जीवनक प्रतिबिम्ब साहित्य मे उपलब्ध होयत। मुदा, साहित्य कें समाजक दर्पण नहि कहि यदि "समाजक कैमरा" कहल जाएत तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि होयत। वस्तुतः साहित्य एहन कैमरा अछि जकरा द्वारा समाजक विभिन्न पोजक फोटो यथावत खींचि लेल जाइछ, जकरा देखि कोनो समाजक क्रिया-कलाप, सभ्यता ओ संस्कृति, समस्या ओ समाधान आदिक मूल्यांकन कएल जा सकैछ। किन्तु साहित्यरूपी कैमरा'क स्वतंत्र सत्ता कथमपि नहि रहितैक यावत पर्यन्त भाषा रूपी 'फिल्म'क आधार-तत्त्व ओकरा नहि भेटितैक।

समाजक जेहन विचार ओ भावना होएत तदनुरूपें ओकर साहित्य सेहो होएत। परंच, ई समस्त भावना ओ विचार कोन माध्यमें अभिव्यक्ति होएत तकर आकलन-निराकरण भाषाहिक साहाय्यें कएल जा सकैछ। बिनु भाषाक माध्यमें केओ एहि रूपक अभिराम ओ अमूल्य साहित्यिक निधिक प्रणयन करबा मे सक्षम नहि भए सकैत। मानव अपन परम्पराक अनुभव सँ लाभान्वित भेल अछि मात्र भाषाक माध्यमें। विभिन्न विषय यथा—भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र किंवा विज्ञान आदि कें आइ जाहि विकसित दशा मे देखल जा रहल अछि तकर एक मात्र श्रेय भाषा कें छैक।

भाषा एवं विचारक अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि। मनुष्यक मस्तिष्क मे जखन विचारक उत्पत्ति भेल होएत तखन भाषाक सृजन सेहो भेल होएत। प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि कहने छथि—

> "आत्मा बुद्धय समेत्यार्थान् मनोयुङ्क्ते विवक्षया।
> मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्॥"

अर्थात् आत्मा बुद्धिक द्वारा अर्थ कें बूझि कए मन कें बजबाक इच्छा सँ प्रेरित करैछ। मन शरीरक अग्नि-शक्ति पर बल दैछ एवं ओ शक्ति वायु कें प्रेरित करैछ जाहि सँ शब्द-वाक्यक उत्पत्ति होइछ। एहि कथन सँ स्पष्ट अछि जे मनुष्यक विकासक संग-संग वाणीक सेहो विकास भेल अछि।

विश्व भरि मे सम्प्रति भाषाक अनुमानित संख्या ३ हजार आंकल—मानल गेल अछि। संभव थीक जे एहनो भाषा हो जकर अद्यपर्यन्त पहचान नहि भए सकल हो। किंतु भाषा विषयक सर्वश्रेष्ठ प्रश्न थीक एकर उत्पत्तिक प्रसंग। कहिया ओ कोन रूपें भाषा एहि पृथ्वी पर आएल, ओहि समय मे भाषाक की रूप छल, पुनः कोन-कोन परिस्थिति मे एहि मे परिवर्तन कोन रूपक भेलैक, आदि। किंतु ई सभ विषय मात्र अनुमान साक्ष्य अछि। प्रामाणिक रूपें एहि तथ्यक निरूपण कोनो भाषाविद एखन पर्यन्त नहि कए सकल छथि। जेना-जेना एहि पर शोध भेलैक, विज्ञानक आविष्कारक संग संचार ओ यातायात व्यवस्था मे विकास भेलैक, तदनुरूपें भाषाक प्रयोजनीयता बूझि पड़ए लगलैक आ तखन अतीतक दिशि लोक कें ध्यान जाए लगलैक। एहि रूपें भाषाक विकास मे भौगोलिक ओ ऐतिहासिक ज्ञान सहायक भेलैक जाहि मे विज्ञान अपन चमत्कार देखौलक आ' कला ओहि पर रंग टीप चढ़ौलक।

भाषा यद्यपि परिवर्तनशील अछि तथापि भाषा-शास्त्री लोकनिक मानस मे एकर वैज्ञानिक अध्ययन करबाक भाव उत्पन्न भेल, फलस्वरूप भाषा विज्ञानक नींव पड़ल। 'भाषा विज्ञान'क साधारण अर्थ होइछ भाषाक विशिष्ट अध्ययन अर्थात् भाषा सँ सम्बद्ध विभिन्न विषयक व्यापक अध्ययन, जाहि मे भाषाक उत्पत्ति, गठन, विकास एवं ह्रास अबैत अछि। किंतु 'भाष्' धातु सँ बनल मात्र दू अक्षरक शब्द 'भाषा' जतबे लघुकाय अछि अपन स्वरूप मे ओतबे भीमकाय ओ व्यापक।

जेना प्रकृतिक असीम ओ अनन्त भवसागरक थाह पाएब असंभव, तहिना भाषा रूपी अगम अथाह सागरक पार पाएब सेहो दुरूह ओ पराभवपूर्ण। परंच भाषाक गति अछि जे ई 'बिंदु' मे 'सिंधु' भरि मानवक सर्वांगीण विकास मे आहुतीय योगदान दैत अछि, सत्य, शिव ओ सुन्दरम्‌क त्रिवेणी संगम मे स्नान-मज्जन कराए जन-जन कें सर्वजनहितायक पाठ पढ़बैत अछि, साहित्य-सुधाक पान कराय समष्टि मे संजीवनी शक्ति भरैत अछि।

यद्यपि भाषाक सीमा अनन्त अछि, तथापि जे किछु जिज्ञासु भाषाविद्, वैज्ञानिक किंवा अन्वेषक लोकनि एखन पर्यन्त एकर सीमा-निर्धारणक प्रयास कएने छथि ताहि सँ एकर अध्ययन मे सुविधा अवश्य भेल अछि, परंच एकर मूल स्थान धरि केओ नहि पहुँचि सकल छथि। जहिना सृष्टिक रचना आ एहि महि पर प्रकृति आ पुरुषक आविर्भावक कथा रहस्यमय अछि. तहिना भाषाक संबंध मे सेहो कहल जा सकैछ। अनुमाने सँ केओ कहैत छथि जे भाषाक उत्पत्ति मनुष्यक जन्मक संगहि भेल। एहि संबंध मे विभिन्न धारणा प्रचलित अछि, आ तेँ निश्चित रूपेँ ई कहब जे अमुके समय मे किंवा अमुके परिस्थिति मे भाषाक सृजन भेल से सर्वथा असंभव अछि। परंच एतबा धरि निश्चित रूपेँ कहल जा सकैछ जे जेना कोनो वस्तुक तीन अवस्था, जन्म, स्थिति ओ लय होइछ, जीवनक चारि लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष अछि, मनसा, वाचा ओ कर्मणा मे सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण समाहित अछि तहिना 'भाषा-शास्त्र'क इतिहास मे परा. पश्यन्ती मध्यमा ओ बैखरी नामक उपादानक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। 'परा' वर्ण ओ शब्द मे निहित भाषाक बीज रूप थीक, 'पश्यन्ती' शब्द-निर्माण थीक, मध्यमा शब्दक अर्थ-बोधक साधन थीक ओ 'बैखरी' अन्तिम अवस्था थीक जाहिमे'बीज रूप 'परा' (वर्ण) अंकुरिते नहि रहि पूर्ण प्रस्फुटित-फलित भए हृदय-कमलकेँ आह्लादित करैत अछि, अर्थात्, पूर्णतः विकसित भाषाक रूप मे समक्ष अबैत अछि जाहिमे भाषाक लक्षण-सँ परिपूरित विभिन्न तत्त्व भाषाक इतिहास, भाषाक साहित्य,भाषाक लिपि ओ व्याकरणक उत्तम सम्मिश्रण रहैछ। एहि समस्त तत्त्व सँ परिपूर्ण रहनहि कोनो भाषा भाषाक संज्ञा ग्रहण कए सकैछ।

आधुनिक काल मे भाषा-विज्ञानक क्षेत्र मे विशेष प्रगति दृष्टिगत होइछ। भाषाक अध्ययन, अनुशीलन, सघटन, संश्लेषण, विश्लेषण, कम्पन ओ मापन आदि विषयक रूप अत्यन्त विकसित भेल अछि आ तेँ आधुनिक युग कें 'भाषा वैज्ञानिक युग'क सज्ञा देल गेल अछि।

भाषा-विज्ञान प्रत्यक्ष रूपेँ सम्बद्ध थीक समाज सँ, संगहि संग ई व्याकरण, साहित्य, तर्कशास्त्र, भूगोल पुरातत्त्व, मानव-शास्त्र. भौतिक शास्त्र, शरीर-विज्ञान, समाज-शास्त्र आदि सँ सेहो सम्बन्धित अछि। एहि विभिन्न विषय सँ सम्बन्ध होएब मएह एकर महत्त्वक प्रतिपादनक सर्वश्रेष्ठ कारण थीक। एकर अतिरिक्तहु भाषा-विज्ञानक उपयोगिता निम्नलिखित बिंदु मे समाहित अछि—

(क) भाषा विषयक ज्ञान-लिप्साक पूर्ति (ख) इतिहास ओ प्रागैतिहासिक सभ्यता पर प्रकाश (ग) विभिन्न समाज-शास्त्रक अध्ययन मे सहायता (घ) विश्वबन्धुत्वक भावनाक प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण (ङ) कोनो जाति-विशेष किंवा मानव-मात्रक,उत्पत्ति ओ विकासक परिचय (च) प्राचीन साहित्यक अध्ययन मे योग एवं पाठ-निर्धारण मे सहायता (छ) भाषा एवं लिपिक स्वरूपक अनुमान मे सहायता तथा (ज) परिनिष्ठित भाषा ओ लिपिक विकास मे सहायता।

विभिन्न भाषा मे मैथिली एक अत्युच्च कोटिक भारतीय भाषा थीक जे भारतक विभिन्न प्रान्त मे ओ एकर अतिरिक्त नेपाल मे द्वितीय राजभाषाक रूप मे प्रतिष्ठित अछि। भारत मे मैथिली भाषीक संख्या चारि करोड़ सँ ऊपर अछि। एकर स्वतंत्र इतिहास, साहित्य, व्याकरण ओ लिपि छैक। इतिहास साक्षी अछि जे राजा विदेहेक समय सँ मैथिली मिथिला-क्षेत्रक भाषा रहल अछि। आ एहि रूपेँ एकर स्वर्णिम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भेटैछ। समयक अन्तराल मे एहि मे विकास-ह्रास होइत रहलैक, तथापि एकर साहित्य कें देखि गौरवपूर्ण रीतिएँ जानल मानल जा

सकैछ जे ई एक स्वतंत्र अस्तित्वसम्पन्न समृद्ध भाषा रहल अछि। भाषाविद् किंवा इतिहासकार लोकनि एहि भाषा सँ सम्बद्ध चित्र-वैविध्य विभिन्न ग्रन्थादि मे उपस्थापित-समाहित कएल जे बहुचर्चित-अर्चित भए एकर व्यापकता-सम्पन्नताक सम्यक् परिचय दैत अछि। परंच दुर्भाग्यवश भाषाक समस्त लक्षण समन्वित इष्ट भाषा सरकारी तंत्र ओ नानारूपी षड्यंत्रक कोपभाजन भए अद्यापि संवैधानिक मान्यता सँ वंचित रहल अछि। आइ प्रयोजन छैक मैथिली भाषी लोकनिक मातृभाषाक ओहि 'स्वर'क जे 'स्वर'क संग 'व्यजनहु'क उच्चारण करैत मैथिली केँ परम-पावन सिंहासन पर सुप्रतिष्ठित करएबा मे अशेष योगदान देअए जाहि सँ रससिद्ध-सिद्धगण डाक-सरह प्रभृतिक सूक्ति, साहित्यमनीषी ज्योतिरीश्वरक गद्य-गौरवक युक्ति, 'देसिल बयना'क अमृतवाणी मुखरित कएनिहार कवि कोकिल विद्यापतिक उक्ति ओ जाज्वल्यमान महाकवि गोविन्ददासक भक्ति-भावपूरित अलंकृत पद्य-प्रसूनक परम्परा मे साधना करैत परवर्ती साधकक मार्ग-प्रशस्त रहल्हि; परंच से तत्क्षणहिं सभव थीक जखन हीनता ओ संकीर्णता केँ तिलांजलि दए समष्टि रूपेँ उदारता-व्यापकता दिसि अग्रसर भेल जाए।

मैथिली भाषाक व्यापकताक केँ देखबाक हेतु डा० ग्रियर्सनक निम्नोक्ति अपेक्षित थीक—

"मैथिली एक भाषा थिक बोली नहि।........ई हिन्दी ओ बंगला सँ भिन्नता रखैत अछि ... ...शाब्दिक ओ व्याकरण-सम्बन्धी—दुनू दृष्टिये। ई ओहने पृथक भाषा थीक जेहन मराठी वा उड़िया अछि। ई एहन क्षेत्र अछि जकर अपन परम्परा छैक, जकर अपन कवि लोकनि छथिन्ह, एकर जे किछु छैक से अपने छैक आ तकर एकरा पूर्ण स्वाभिमान छैक।"

प्रस्तुत पोथी 'मैथिली भाषा-शास्त्र'क प्रणयनक एक मात्र उद्देश्य अछि भाषा ओ भाषा विज्ञान सँ सम्बद्ध विभिन्न सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक पक्षक उद्घाटन करब। पोथीक परिवेश मैथिली भाषा थीक तेँ एहि सँ सम्बन्धित बहुतो विषयक सेहो समावेश करबाक हमर प्रयास पोथी मध्य रहल अछि।

पोथी मध्य विद्वान लोकनि द्वारा प्रस्तुत कएल विभिन्न विषय केँ यथावत हम रखलहुँ अछि परंच एहि मे कोनो-कोनो ठाम एहनो बात आयल अछि जाहि सँ हम सहमत नहि छी। यथा—डा० ग्रियर्सन जे मैथिलीक उन्नायक मानल जाइत छथि, अपन ग्रन्थ 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' मे 'बिहारी' भाषाक उल्लेख बिहारक मध्य मानने छथि। परंच वास्तविकता तँ ई अछि जे 'बिहारी' नामक कोनो भाषा एतय अछिये नहि। एहि सँ मैथिलीक अभ्युन्नतिक हेतु जतय हुनक स्तुत्य प्रयास रहल ओत्तहि दोसर दिशि बिहारी'क अस्तित्वक चर्चा सँ मैथिलीक संबंध मे भ्रामक तथ्य सेहो पसरल अछि।

मैथिली मे 'भाषा-विज्ञान'क अध्येताक हेतु पोथीक नितान्त अभाव रहल अछि, ताही दृष्टिये एकर रचना कएल अछि। आशा अछि जे विभिन्न विश्वविद्यालय मे अध्ययनरत एम० ए० धरिक छात्र ओ संगहि बी० एड० ओ बी०पी०एस०सी०क परीक्षार्थी हेतु सेहो ई लाभप्रद होएत।

हम विशेष रूपेँ श्रद्धावनत छी विभिन्न भाषाक मर्मज्ञ विद्वतगण डा० जयकान्त मिश्रजी, डा० आनन्द मिश्रजी ओ डा० विधाता मिश्रजीक जनिका लोकनिक आशीर्वादक दू शब्द पोथीक पाण्डुलिपि देखाए प्राप्त भेल।

साहित्य अकादमी सँ पुरस्कृत साहित्य-मनीषी प्रो० सुमनजी, एल.एन. मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागाध्यक्ष पद पर सुप्रतिष्ठित डा० शैलेन्द्र मोहन झाजी, गंभीर विद्वान डा० रामदेव झाजी एवं डा० अमरनाथ झाजी (स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, एल० एन० मिथिला वि० वि०), उच्च

कोटिक समालोचक डा० अमरेश पाठक (मैथिली विभागाध्यक्ष, पटना वि०वि०), मूर्धन्य साहित्य-कार डा० गंगेश गुंजन ओ डा० भीमनाथ झाजी लोकनि द्वारा सतत प्रेरित-प्रभावित ओ प्रोत्साहित होइत रहल छी, एतदर्थ सभक चिरकृतज्ञ छी ।

सात्त्विक श्रोत ग्रहण कएने निगरानी विभागक अवकाश प्राप्त अभियंता-प्रमुख परम श्रद्धेय श्री भवानन्द झाजीक स्नेहाशीष ओ विषय-निर्देशन सँ सर्जनात्मक क्रिया मे गुरुतर योगदान भेटल अछि ।

स्वनामधन्य बाबा डा० सूर्यकान्त ठाकुरजीक अशेष प्रसाद पर्वत सर्जनात्मक रेखा-पथ दिशि उन्मुख होइत रहल छी, जनिका प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पण करैत आह्लादित छी ।

परमाराध्य बाबूजी डा० लोक नाथ मिश्रजी (राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता प्रधानाध्यापक, उच्चविद्यालय, सिंहवाड़) क स्नेहाशीष ओ स्वाध्याय-संकेत, ककाजी प्रो० रत्नेश्वर झा (न्यू गवर्नमेण्ट पौलिटेकनिक, पटना)क हृदयतः ओ मनतः सद्‌विचार रश्मिक उद्‌गार-मात्र, ओ गुरुवर डा० चन्द्रधर झाजी (रीडर, स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, पटना वि०वि०)क कुशल मार्गदर्शन हमर मनोबल कें परिपुष्टि कएलक अछि ।

संयम ओ साधनाक संग सुप्रतिष्ठित ककाजी श्री मदन मिश्र (प्रशाखा पदाधिकारी, बिहार विश्व-विद्यालय सेवा आयोग, पटना)क वैचारिक परिधि अमृतवाणी बनि गूढ़तम विषयक मर्मस्थल धरि सहज भावें पहुँचएबा मे महत्त्वपूर्ण योगदान देलक अछि ।

स्मित मुखी, सिद्धहस्त समालोचक एवं कुशल इतिहासवेत्ता ब्रह्मलीन डा० जटाधर झा (बहिनोई)क पवित्र आत्माक शान्त्यर्थं कामना करैत छी जनिक पंक्ति—'धीरू बाबू, नीक वस्तु लिखू, कम लिखू, अध्ययन बेशी करू'.... स्मरण अबैछ जे हमर लेखकीय जीवनक प्रेरणाक अक्षय स्रोत रहल अछि ।

मित्र वर्ग मे डा० परमानन्द मिश्र, डा० बिनोद कुमार तिवारी एवं डा० श्री शंकर झा (यू-आर-कालेज, रोसड़ा) कें धन्यवाद दैत छियन्हि जनिका लोकनिक लेखन-जिज्ञासा हमर लेखनी-शक्ति कें जगौलक । एहि संगहि डा० इन्द्र मोहन, श्री सुधीर चन्द्र झा शंकर, श्री सरस्वतीकान्त झा, चि० श्री अजीत, प्रफुल्ल, बब्बू डुल्लू, आणू, मनीष, जूली आदिक यथायोग्य सहयोग ओ जिज्ञासा सेहो सराहनीय रहल अछि, तदर्थ सभकें धन्यवाद ।

हम समस्त गुरु एवं विद्वत् समाजक आभारी छी जनिक ग्रन्थ किंवा विचारक समावेश पोथी मध्य कएल अछि ।

प्रो० स्व० हरिमोहन बाबूक 'प्रेसक लीला' मे प्रायः कोनो मैथिली पाठक अनभिज्ञ नहि होएताह, तें पोथी मध्य यत्र-तत्र तकर पुनरावृत्ति भेटबे करत, जकर परिमार्जन मे क्षमा-याचनाक

अतिरिक्त कोनो विकल्प नहि । हँ, विषय-वस्तु मे विचारगत भिन्नताक हेतु उपयुक्त सुझावक हम हृदयतः स्वागत करब ।

अन्त मे हम अपन आभार-माल्य अर्पित करैत छी प्रकाशक श्री परमानन्द झाक प्रति जे एहि ग्रंथक प्रकाशनक भार सहर्ष अपना ऊपर लेल ।

गुरु पुर्णिमा
२१-७-१९८६

—धीरेन्द्र नाथ मिश्र
मैथिली विभाग,
एम० के० कॉलेज,
लहेरियासराय, दरभंगा

गुरोर्मध्ये स्थिता माता
मातृमध्ये स्थितो गुरू ।
गुरुर्माता, नमस्तेऽस्तु
मातृ गुरूं नमाम्यहम् ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।। (मधुमती)



दू शब्द

हमरा डाक्टर श्री धीरेन्द्र नाथ मिश्रजीक लिखल 'मैथिली भाषा-शास्त्र' पाण्डुलिपिक रूपमे देखबाक सुयोग भेटल। आनन्द भेल जे एतेक विलक्षण पोथी, एतेक साङ्गोपाङ्ग रूप मे तैयार भेल छन्हि। आशा करैत छी एकरा पढ़ि कए छात्र वा साधारण पाठको विषय सभक ज्ञाता भए सकैत छथि। भाषा, भाषा-विज्ञान, अर्थ-विज्ञान, ध्वनि-विज्ञान, पद (रूप)—विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, भारतक भाषा, विश्वक भाषा, लिपि, व्याकरण आदि अनेक विषयक सर्वतोमुखी विवरण देने छथि। एहि सभ विषय पर पहिनो ई पुस्तक सभ लिखने छथि, परंच ई पुस्तक सभ सँ पूर्ण ओ विस्तृत अछि।

हम आशीर्वाद दैत छियन्हि जे विद्वान् लेखक एही प्रकारें दिन-दिन अग्रसर होइत रहताह।

डा० जयकान्त मिश्र,
एम० ए०, डी० फिल,
भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
अंग्रेजी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

डा० श्री धीरेन्द्र नाथ मिश्र द्वारा लिखित 'मैथिली भाषा-शास्त्र' पाण्डुलिपि रूप मे देखबाक अवसर भेटल। सम्प्रति भाषा-शास्त्र एवं तत्सम्बन्धी अध्ययन विशेष रूपें भए रहल अछि तथा भाषाक सम्बन्ध मे अनेक नव-नव तथ्य नित्य प्रकाश मे आबि रहल अछि। फलतः ई शास्त्र दिनानुदिन जटिल सेहो भए रहल अछि। भाषा-शास्त्रक नामहुक विषय मे अनेक विवाद उठि रहल अछि। ध्वनि, बोली विज्ञान, भाषा भूगोल, वाक्य विज्ञान आदि विषय पर नवीन अन्वेषण सभ भए रहल अछि। विज्ञान-प्रधान युग भेलासँ सम्प्रति एहि अध्ययन मे यान्त्रिक सहयोग पूर्ण रूपें लेल जाइत अछि।

एहि सभ कारणें विश्वविद्यालय सभ मे भाषा एवं साहित्यक छात्र लोक नि कें भाषा विज्ञानक शिक्षण-प्रशिक्षण सेहो चलि रहल अछि, किंतु मैथिली पढ़निहार छात्र कें अपना भाषा मे रचित सुगम एवं सुलभ पोथीक सर्वथा अभाव अछि। आँग्ल भाषा मे लिखित पोथीसँ आजुक छात्रकें ओहि भाषाक सम्यक् ज्ञानक अभाव मे साहाय्य नहिएँ जेकाँ होइत छैन्हि।

एहना स्थिति मे चि० डा० धीरेन्द्रजीक पोथी छात्र लोकनिक हेतु परीक्षार्थं उपयोगी सिद्ध होएत एहन हमर विश्वास अछि।

पुस्तकक प्रचार-प्रसारक हम कामना करैत छी।

डा० आनन्द मिश्र
एम० ए० (अर्थशास्त्र, मैथिली एवं हिन्दी), डी० लिट्
११. ६. ८६ भूतपूर्व युनिवर्सिटी प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय
एवं
रिसर्च प्रोफेसर
मिथिलेश रमेश्वर सिंह मैथिली चेयर
पटना वि० वि०

I got an opportunity to go through the book Maithili Bhasa Sastra written by Dr. Dhirendra Nath Mishra, Deptt. of Maithili, Maharani Kalyani College, Laheriasarai, Darbhanga. The book consists of all the branches of linguistics with modern outlook. Chapter on phonetics is specially based on scientific analysis of the subject. The book will be helpful to the students of languages upto post graduate stage. Achievement of the author is praiseworthy.

Dr. Vidhata Mishra
M. A (Sanskrit, Pali, Prakrit and Jain Philosophy, Hindi, Maithili),
Acharya (Vyakarana, Sahitya, Veda, Vedanta)
11. 6. '86 Ph. D, D. litt, F. R. A. S. (London)
University Professor and Head, Deptt. of Grammar and Linguistics,
Dean of the faculty of languages and Literature.
Former Acting Vice-Chancellor, K. S. D. S.U.
Darbhanga.

भाषा

'भाष्यते लोक व्यवहारादिना प्रयुज्यते या सा भाषा'— अर्थात् लोक व्यवहार आदि सँ प्रयुक्त भाषा भाषा कहबैछ। तेँ विशिष्ट लोकक वाणी भाषा नहि थीक, परंच सर्वसाधरण जन-जातिक भाषा मूलतः भाषा कहबैछ। सएह भाषा भाषा विज्ञान केँ अभिप्रेत अछि। भाषा शब्द थीक अत्यन्त व्यापक। एकर विकास संस्कृतक 'भाष्' धातु सँ भेल अछि, जकर अर्थ होइछ 'बाजब' किंवा 'कहब'। एहि मे पशु-पक्षीक बोली सँ लए प्रकांड पंडितक भाषा अबैछ। परंच, मनुष्य जाहि भाषाक प्रयोग अपन विचार-विनिमयक क्रम मे करैछ ओ अन्य प्राणीक भाषा सँ सर्वथा भिन्न थीक। एही हेतु भाषा-विज्ञानक अंतर्गत हम जाहि भाषाक अध्ययन करैत छी ओकर क्षेत्र अत्यन्त सीमित अछि। ओहि मे ओही 'सार्थक ध्वनि समूह' केँ स्थान देल जाइछ जकर अर्थक विश्लेषण भऽ सकए।

भाषाक परिभाषा— अनेकानेक भाषाशास्त्री लोकनि 'भाषा'क शास्त्रीय अर्थ केँ स्पष्ट करैत ओकर परिभाषा निर्धारित करबाक सफल प्रयास कएलन्हि अछि। एहि मे भारतीय ओ पाश्चात्य, प्राचीन ओ आधुनिक सभ वर्गक विद्वत्गण छथि जकरा निम्न रूपेँ देखल जा सकैछ।

(१) **ए. एच. गार्डिनर**—(a) "The Common definition of speech is the use of articulate sound symbols for the expression of thought."

(Speech and Language)

(b) "Language is expression of human thought by means of speech Sound or articulate Sound."

अर्थात् भाषा मनुष्यक ओहि चेष्टा या व्यापार केँ कहल जाइछ जाहि सँ मनुष्य अपन उच्चारणोपयोगी शरीरावयव सँ उच्चारण कएल गेल या व्यक्त शब्दक द्वारा अपन विचार केँ अभिव्यक्त करैछ।

(२) **मेरिओ ए० पेई तथा फ्रैंक ग्यानॉर**—"A system of Communication by Sound, i, e, through the organs of speech & hearing, among human beings of a certain group or community, using vocal Symbols possessing arbitrary conventional meanings." (Dictionary of Linguistics)

(३) **स्त्रुतेवां**—"A Langaugse is a system of arbitrary vocal symbols by means of which members of a social group co-operate and interact."

(४) **इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका**—"Language may be defined as an arbitrary, system of vocal symbols by means of which human beings as member of a social group and Participants in culture interact and Communicate."

(५) **हेनरी स्वीट**—'Language may be defined as expression of human thought by means of speech Sound or articulate Sound.' (the History of Language)

(६) **हैलिडे**—"Language Can be thought of as organised noise used in situations actual social situation, or in other words contextualised systemic Sound."

(७) क्रोचे—"Language is articulated Limited Sound organised for the purpose of expression."

(८) ब्लोक तथा ट्रेगर—"A Language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a society group co-operates."

(९) एडवर्ड सपीर—"Language is purely human and non-instinctive method of Communicating ideas motions and desires by means of a system of voluntarily produced symbols."

अर्थात् भाषा ऐच्छिक रूप सँ उत्पादित प्रतीकक एक व्यवस्था थीक जे शुद्ध रूपें मानवीय अछि एवं सहज वृत्तिक विशेषता सँ रहित अछि एवं जकर प्रयोग विचार, संवेग एवं इच्छाक अभिव्यक्तिक हेतु होइछ।

(१०) जेस्परसन—मनुष्य ध्वन्यात्मक शब्द द्वारा अपन विचार कें व्यक्त करैछ। मानव-मस्तिष्क वस्तुतः विचार प्रकट करबाक हेतु एहन शब्दक सतत प्रयोग करैछ। एहि प्रकारक क्रिया-कलाप कें भाषाक संज्ञा देल जाइछ।

(११) वेन्ड्रीज—भाषा एक प्रकारक चिह्न थीक। चिह्न सँ तात्पर्य ओहि प्रतीक सँ थीक जाहि सँ मानव अपन विचार दोसरा पर प्रकट करैछ। ई प्रतीक सेहो कतेको प्रकारक होइछ। जेना-नेत्र-ग्राह्य, श्रोतृ-ग्राह्य एवं स्पर्श-ग्राह्य। वस्तुतः भाषाक दृष्टि सँ श्रोतृ-ग्राह्य प्रतीक सएह सर्वश्रेष्ठ थीक।

(१२) भाषा-रहस्यकार—मनुष्य मनुष्यक मध्य वस्तुक विषय मे अपन इच्छा एवं मतिक आदान-प्रदान करबाक लेल व्यक्त ध्वनि-संकेतक जे व्यवहार होइछ ओकरा भाषा कहल जाइछ।

(१३) डॉ० बाबू राम सक्सेना—जाहि ध्वनि-चिह्न द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करैत अछि ओकरा समष्टि रूपें भाषा कहल जाइछ। भाषाक एहि लक्षणक अंतर्गत भाव एवं इच्छा सेहो थीक। (सामान्य भाषा विज्ञान)

(१४) प्लेटो—विचार आत्माक मूक या अध्ययनात्मक बातचीत अछि, किंतु वएह जखन ध्वन्यात्मक भए मुँह सँ प्रकट होइछ तऽ ओकरा भाषाक संज्ञा देल जाइछ। (सोफिस्ट)

(१५) प्रो० देवेन्द्र नाथ शर्मा— उच्चरित ध्वनि-संकेतक सहायता सँ भाव या विचारक पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा थीक।

अथवा, जकर सहायता सँ मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय किंवा सहयोग करैत अछि, ओहि यादृच्छिक, रूढ़, ध्वनि-संकेतक प्रणाली कें भाषा कहल जाइछ।

(१६) डॉ० भोला नाथ तिवारी—भाषा निश्चित प्रयत्नक फलस्वरूप मनुष्यक मुँह सँ निस्सृत ओ सार्थक ध्वनि समष्टि थीक जकर विश्लेषण एवं अध्ययन भऽ सकए।

अथवा, भाषा उच्चारणावयव सँ उच्चरित अध्ययन विश्लेषणीय यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकक एहन व्यवस्था थीक जकरा द्वारा एक समाजक लोक परस्पर भाव एवं विचारक आदान-प्रदान कए सकैछ। (भाषा विज्ञान)

(१७) डॉ० मंगलदेव शास्त्री—भाषा मनुष्यक ओहि चेष्टा किंवा व्यापार कें कहल जाइछ जाहि सँ मनुष्य अपन उच्चारणोपयोगी शरीरावयवी सँ उच्चारण कएल गेल वर्णात्मक या व्यक्त शब्दक द्वारा अपन विचार कें प्रकट करैछ। (तुलनात्मक भाषा शास्त्र)

(१८) डॉ० श्याम सुन्दर दास—मनुष्य एवं मनुष्यक बीच वस्तुक विषय मे अपन इच्छा एवं मतक आदान-प्रदान करबाक लेल व्यक्त ध्वनि-संकेतक जे व्यवहार होइछ ओकरा भाषा कहल जाइछ। (भाषा विज्ञान)

(१९) आचार्य किशोरीदास बाजपेयी—विभिन्न अर्थ मे सांकेतिक शब्द-समूह सएह भाषा थिक, जकरा द्वारा हम अपन मनोभाव दोसराक प्रति बहुत सरलता सँ प्रकट करैत छी।

(भारतीय भाषा विज्ञान)

(२०) हम्बोल्ट—उच्चरित ध्वनि केँ भावाभिव्यक्तिक उपयोगी बनएबाक चिरंतन चेष्टाक फल थीक भाषा। ई श्रवणेन्द्रियक पथ सँ मानव-मनक अभिव्यक्ति थीक।

(२१) हरिशंकर जोशी—भाषा वहिर्ब्रह्माण्डक ओहि अखिल चित्रक वर्णन थीक जे क्षीरसागर अथवा सूक्ष्मतम अणु या शब्दाणु सँ बनल रहैछ, ओ शब्दाणु चित्त प्रतिभा मे सजीवता या पश्यन्तीक रूप पाबि पुनः प्राणवायुक रूप धारण कए जखन सरस्वती (जिह्वा) सँ स्थान करणक आघात-प्रघात सँ तैजस पाक द्वारा ध्वनिक रूप धारण करैछ, तँ पुनः अपन स्वरूप बहिर्ब्रह्माण्डक चित्र मे स्फोट रूप मे, अर्थ प्रतिबिम्बित स्वरूप मे अनुभूत करैत वाक्य या भाषा कहबैत अछि।

(प्रतिभा दर्शन)

(२२) प्रो० रमानाथ झा—"साहित्यक शरीर थीक भाषा। संवेगात्मक अनुभूति, जकरा साहित्य-शास्त्र मे रसक आख्या कहल गेल अछि भाषाक माध्यम सँ अभिव्यक्त होइत अछि।

(प्रबंध-संग्रह)

(२३) Forze Zinski Boehme—अपन व्यापकतम रूप मे भाषाक अर्थ थीक हमर विचार एवं मनोभाव केँ व्यक्त करएवला एहन संकेतक कुलयोग जे देखल वा सुनल जा सकए एवं जे इच्छानुसार उत्पन्न हो एवं दोहराओल जा सकए।

(२४) भाषाक भाषावैज्ञानिक अर्थ—भावाभिव्यक्तिक समस्त साधन भाषाक व्यापक अर्थ मे सम्मिलित भए जाइछ। भाषा, पशु-पक्षी सभक भाषा अथवा संस्कृतक टीकाकार द्वारा 'इति भाषायाद्' द्वारा अभिप्रेत भाषा मे सर्वत्र एकहि भाव अछि—ओ साधन जकरा द्वारा एक प्राणी दोसर प्राणी पर अपन विचार, भाव या इच्छा प्रकट करैछ।

वस्तुतः भाषाक व्यापक अर्थ अछि। भाषा विज्ञान मात्र सार्थक ओ शब्द-निर्माण मे सहायक ध्वनिये के 'भाषा'क परिधिक अन्तर्गत मानैत अछि।

भाषाक प्रकृति—जाहि रूपेँ प्रत्येक मानव किंवा पदार्थक अपन विशिष्ट प्रकृति होइछ ताही रूपेँ समस्त भाषाक सेहो अपन वैशिष्ट्य होइछ एवं जाहि तरहेँ स्थान, जलवायु, देश-काल आदि मानवक विभिन्न वर्ग ओ जाति आदिक प्रकृति केँ प्रभावित करैछ ताही तरहेँ वक्ताक बहुत बातक ओकर भाषा पर सेहो बहुत किछु प्रभाव पड़ैत अछि। अर्थात् कोनो भाषाक प्रकृति पर ओकर वजनिहारक प्रकृतिक अत्यधिक छाप दृष्टिगत होइछ।

सभ भाषाक प्रकृति ओकर व्याकरण, भाव-व्यंजनक प्रणाली, मुहाबरा ओ लोकोक्ति, क्रिया-प्रयोग, तद्भव शब्दक रूप ओ बनावट आदि मे समाहित रहैछ। प्रकृतिक समुचित ज्ञान ओही व्यक्ति केँ होइत छन्हि जे ओहि भाषाक एहि समस्त बातक अध्ययन मनोयोगपूर्वक सूक्ष्मता ओ सावधानीक संग करैत छथि।

भाषाक प्रकृतिक सेहो साम्य अछि मनुष्यक प्रकृति सँ। मनुष्य वएह वस्तु खा कऽ पचा सकैछ जे ओकर प्रकृतिक अनुकूल होइछ। यदि ओ प्रकृति-विरुद्ध वस्तु ग्रहण करत तँ ई ध्रुव थीक जे ओ रोगी होएबे करत। भाषा सेहो वएह तत्त्व धारण कए सकैछ जे ओकर प्रकृतिक अनुकूल होइछ। ओकर प्रकृतिक प्रतिकूल जे तत्त्व होएत, ओ यदि जबर्दस्ती ओकर शरीर मे प्रविष्ट कराओल जाएत तँ ओकर स्वरूप ओ शरीर मे विकृति आबि जाएत। जाहि रूपेँ मनुष्य केँ दोसरा सँ बहुत किछु सिखबा-बुझबाक ओ लेबाक प्रयोजन पड़ैछ तहिना भाषा केँ सेहो आदान-प्रदानक प्रयोजन पड़ैछ। हमरा सभकेँ भाषाक क्षेत्र मे समस्त नीक विषय केँ लेबाक चाही, किंतु ताहि मे चेतन-दृष्टि राखि प्रकृतिक एहि तत्त्व सभकेँ ध्यान मे राखि, आँखि मुनि कऽ नहि।

भाषाक ई प्रकृति-तत्त्व सएह ओकर जीवन होइछ। ई तत्त्व प्राकृतिक होइछ, कृत्रिम नहि। इएह कारण थीक जे कुर्सी टेबुल सदृश भाषाक संरचना नहि भए सकैछ। पाश्चात्य देश मे कतिपय गंभीर विद्वान लोकनि समय-समय पर कतोक बेर एहन भाषाक प्रणयन करबाक प्रयास कएल जे समस्त संसार मे नहि तँ, कम सँ कम ओकरा बहुत पैघ भाग मे बाजल एवं लिखल-पढ़ल जा सकए। एहन भाषा मे 'एस्पिरेंटो' नामक भाषा अत्यधिक प्रसिद्ध अछि जकर प्रचारार्थ आथक प्रयास कएल गेल, किंतु तैयो ओकर अस्तित्व स्थापित नहि रहि सकल। 'एस्पिरेंटो' सँ पूर्वहु 'वोलयुक' नामक एक भाषाक सृष्टि कएल गेल छल। एकर पश्चात् रूस मे इन्डियान न्यूट्रल नामक भाषाक रचनाक प्रयास भेल। एहि भाषा सभक नहि चलबाक कारण ई भेल जे ई सभ प्राकृतिक नहि छल-आ तेँ एहि मे कोनो जीवन छल नहि।

जे व्यक्ति शब्दक बनावट, भावाभिव्यक्तिक प्रणाली, क्रिया, मुहावरा ओ लोकोक्ति आदिक सर्वदा ध्यान रखैत छथि वएह एहि तथ्य सँ भिज्ञ भए सकैत छथि जे कोन विषय हमर भाषा-प्रकृतिक अनुकूल अछि आ कोन प्रतिकूल। एहन व्यक्ति कोनो नवीन शब्द केँ सुनला पर ई कहि सकैत छथि जे अमुक शब्द हमर भाषाक नहि थीक ई निरर्थक थीक, किंवा फलाँ भाषाक थीक अथवा हमर भाषाक थीक।

भाषाक विशेषता ओ प्रवृत्ति— भाषाक अनेक विशेषता होइछ जकरा समष्टि रूपेँ प्रकृतिक संज्ञा सँ बूझल जाइछ। एकरा निम्न रूपेँ देखल जा सकैछ—

(१) समाजक परम्परागत सम्पत्ति
(२) अनुकरण द्वारा अर्जन
(३) सामाजिक निधि
(४) विकासशील ओ परिवर्तनशील
(५) विकास मे अवरोध
(६) प्रवाह अविच्छिन्न, कोनो अंतिम स्वरूप नहि
(७) प्रवाह कठिनता सँ सरलता दिशि उन्मुख
(८) विकास संयोगात्मक सँ वियोगात्मक आ पुनः संयोगात्मक दिशि
(९) अर्जित सम्पत्ति
(१०) स्वतंत्र संरचना (ढाँचा)
(११) द्वंध रचना
(१२) रूप रचनागत वैशिष्ट्य
(१३) सृजनात्मकता
(१४) ऐतिहासिक सीमा
(१५) भौगोलिक सीमा
(१६) पैत्रिक सम्पत्ति नहि
(१७) स्थूलता सँ सूक्ष्मता ओ अप्रौढ़ता सँ प्रौढ़ता दिशि उन्मुख

(१८) स्पष्ट किंवा अस्पष्ट एक मानक रूप
(१९) भाषा सर्वव्यापक
(२०) भाषा संप्रेषणक मौलिक साधन
(२१) भाषा व्यवहार द्वारा अर्जित
(२२) सहज ओ नैसर्गिक क्रिया
(२३) स्थिरीकरण ओ मानकीकरण सँ प्रभावित
(२४) पहिने उच्चरित रूप मे परिवर्तित

(१) **समाजक परम्परागत सम्पत्ति**—भाषा एक परम्परागत सम्पत्ति थीक। जेना मनुष्य परम्परा सँ अनेक सामाजिक निधि प्राप्त करैछ ओहिना भाषा मे सेहो पबैत अछि। बच्चा जखन जन्म लैत अछि तँ ओ प्रकृति सँ बजबाक शक्ति लए अबैछ एवं मायक कोर मे अपन मातृभाषा बाजब सिखैत अछि। क्रमागत सामाजिक सम्पर्क सँ ओ अपन एहि विशेषता कें विकसित करैत जाइत अछि। ई एक परम्परागत सम्पत्ति थीक एकर सर्वश्रेष्ठ प्रमाण ई थीक जे बच्चा एकरा सिखबा मे तर्क ओ ज्ञानक प्रयोग नहि करैछ। जखन ओकरा बता देल जाइछ जे अमुक वस्तुक नाम 'पोथी' थीक, अमुक केर नाम 'घड़ी' थीक तँ ओ ओकरा ओहिना मानि लैत अछि। ओ ई तर्क नहि करैत अछि जे ओकर नाम 'पोथी' किंवा 'घड़ी' किएक पड़ल।

भाषाक परम्परागत सँ तात्पर्य थीक जे ओ जन्महि सँ प्रतिभा लए उत्पन्न होइछ जे ओ बाजि सकए। समाज मे आबि ओकर ओहि प्रतिभाक विकास भए जाइछ। शिक्षा ओकरा सुसंस्कृत बना दैछ। भाषाक उत्पत्ति ओ विकास समाज सँ होइछ। भाषा समाज, समाजक हेतु ओ समाज द्वारा सृजित होइछ। भाषाक ओना तँ अनेक आधार होइछ—यथा भौतिक वा साहित्यिक, परंच इहो सभ सामाजिक रूपहिक विभिन्न पक्ष थीक। भौतिक आधार भाषा कें एक व्यक्ति सँ दोसर व्यक्ति तक पहुँचएबाक काज करैछ तँ साहित्यिक आधार भाव ओ विचारक संचित राशि कें। अर्थात् कोनो दृष्टिएँ देखला पर भाषाक सामाजिक रूप स्पष्ट अछि। वस्तुतः भाषाक उत्पत्तिये मुख्य रूपें सामाजिकताक निर्वाहक हेतु भेल अछि।

(२) **अनुकरण द्वारा अर्जन**—भाषाक अर्जन हम अनुकरण द्वारा करैत छी। बच्चाक समक्ष माँ मामा, बाबा कहैत अछि। बच्चा सुनैत अछि एवं क्रमागत ओकरा स्वयं कहबाक प्रयास करैत अछि। महान् दार्शनिक अरस्तू कहने छलाह जे अनुकरण मानवक सर्वश्रेष्ठ गुण थीक। वस्तुतः कोनो बच्चा भाषा कें सिखबा मे ओही गुणक सदुपयोग करैछ। मनुष्य जेना नाक मुँह, आँखि, हाथ, पैर आदि लए उत्पन्न होइछ तेना भाषा कें लऽ नहि, अर्थात् भाषा जन्मजात नहि थीक, मुदा पशु मे जतए विवेक बुद्धिक परिपक्वताक अभाव रहैछ ततए मानव मे एहि पर विचार करबाक पूर्ण सामर्थ्य. तें ई भाषा ग्रहण कए सकैछ आ से जाही परिवेश ओ वातावरण मे रहैछ ओहने भाषा सिखैत अछि। भारतीय बच्चा कें सेहो यदि इंगलैंड मे राखि देल जाएत तँ ओहो ओकरहि अनुकूल भाषा कें ग्रहण करत।

(३) **सामाजिक निधि**—भाषा एक अर्जित सम्पत्ति थीक। मनुष्य समाज मे रहि एहि सम्पत्ति कें अर्जन करैछ। समाज मे परम्परा सँ जाहि भाषाक प्रचलन ओ प्रसार होइछ मनुष्य ओकरा अपनबैत अछि एवं ओकरहि प्रयोग करैत अछि। वस्तुतः समाजक अतिरिक्त भाषाक कोनो अस्तित्व किंवा महत्व नहि अछि। भाषा होइछ विचार-विनिमयक माध्यम। विचार विनिमयक निमित्त समाजक सत्ता अनिवार्य थीक। ओना एकान्त मे सेहो बैसि मनुष्य विचार करबा मे भाषाक उपयोग करैछ। संभव थीक एकान्त मे किछु कहि दऽ ओ भाषाक प्रयोग करए परन्तु एहि दुनू स्थिति मे ओहि साधनक प्रयोग अवश्य करत जे ओ समाजक सदस्यक रूप मे अर्जन कएलक अछि।

भाषा एक भेलहु पर सामाजिक स्तर भेद सँ ओहि मे अन्तर आबि जाइछ। सामान्य रूपें ई देखैत छी जे समस्त मैथिली बजनिहार मैथिलीक प्रयोग करैत छथि परंच सभक मैथिली एक रंग नहि होइत अछि। जकर जेहन सामाजिक स्तर होइछ, ओकर भाषा ओहने भए जाइछ। ई स्तर-भेद सांस्कृतिक, बौद्धिक, आर्थिक, सामाजिक ओ व्यावसायिक कारण सँ प्रभावित होइत अछि। ई स्तर-भेद सर्वाधिक शब्द-भंडार मे देखि पड़ैछ आ तकर पश्चात् व्याकरण मे आ पुनः ध्वनि मे सभ पेशाक लोकक अपन-अपन शब्द भंडार होइछ जकर प्रयोग ओ बर्जत काल करैत अछि। ई सभ स्तर-भेद विषय ओ भाषा मे देखि पड़ैछ। शिक्षित व्यक्ति जाहि शिष्टता ओ शालीनता पूर्वक उच्चारण करत तेना अशिक्षित वा अशिष्ट व्यक्ति नहि।

वस्तुतः भाषा सामाजिक वस्तु थीक जे स्तरित होइछ सामाजिक दृष्टिवें।

(४) विकासशील ओ परिवर्तनशील— भाषा मे सेहो अन्य सांसारिक वस्तुक सदृश परिवर्तन होइत रहैछ। प्रत्येक देश ओ युगक भाषा परिवर्तित भेल अछि। अनुकूल किंवा प्रतिकूल परिस्थितिक कारणें परिवर्तनक मात्रा मे भले अन्तर जे हो किन्तु परिवर्तनक क्रम अनिवार्य अछि। परिवर्तन भाषाक समस्त तत्व मे पाओल जाइछ। ध्वनि शब्द, व्याकरण अर्थ आदि सभ परिवर्तित भए जाइछ। 'बिन्दु, सँ बूँद शाक सँ साग एवं मेघ सँ मेह ध्वनि परिवर्तन स्पष्ट थीक। एही प्रकारें व्यवहार मे आबए वला शब्द सभक प्रयोग समाप्त भए ओहि स्थान पर नवीन शब्द जन्म लऽ लैत अछिआ' वएह प्रयुक्त होमए लगैछ। उदाहरण स्वरूप—१९२१ ई० मे 'सत्याग्रह, किंवा आन्दोलन सदृश शब्दक प्रयोग होमए लागल। अर्थ मे कोना परिवर्तन होइछ तकर बानगीक हेतु द्रष्टव्य थीक ,असुर' शब्द। वैदिक भाषा मे असुर'क अर्थ देब होइत छल परंच बाद मे ई 'राक्षसक' वाचक बनि गेल। 'गर्भिणी' सँ गभिन ओ 'गाभिन'शब्द बनल जे आब मात्र पशुक प्रसंग प्रयोग मे अबैछ। एही रूपें ,झ' क रूप मे उपाध्याय' केँ के बूझि सकत ? 'उपाध्याय' सँ 'ओज्झा' एवं फेर 'ओझा' 'झा' भेल अछि। एहिना 'चतुर्वेदी' सँ 'चौबे बनल अछि। मुदा, भाषाक निर्बाध परिवर्तनशीलता ककरो मर्यादा केँ शाश्वत नहि रहए दैछ। एहि परिवर्तनक अत्यधिक श्रेय सामाजिक वातावरण मे परिवर्तन, जाहि मे ज्ञानक अभिवृद्धि ओ नवीन विचारक आगमन सेहो समाविष्ट अछि, बनल अछि। भौतिक ओ मानसिक कारण तँ एहि परिवर्तनक हेतु उत्तरदायी अछिये।

वस्तुतः विकास किंवा परिवर्तन भाषाक प्रमुख गुण होइछ। ई चिरविकासशील ओ परिवर्तनशील थीक। समाजक वातावरण एवं शिक्षा संस्कारक कारणें मानव अपन भाषाक सतत विकास परिष्कार करैत रहैछ। एतदतिरिक्त सामाजिक संगठन एवं जीवन प्रणाली आदिक कारणें भाषाक विकास होइत रहैछ।

(५) विकास मे अवरोध—भाषाक अनिवार्य विशेषता विकास अथवा परिवर्तनशीलता थीक। परंच एहि मे बाधाक तत्व सेहो विद्यमान रहैछ। एक दिशि ओ अपन विकास करैछ एवं दोसर दिशि एहि मे बाधा सेहो अबैत जाइछ। विकास मे ई बाधा सभ भाषाक प्रकृति थीक। समाजक नियंत्रण जे व्याकरणक नियमक रूप मे प्रकट होइछ, भाषाक विकास मे बाधा उत्पन्न करैछ। किछु दृष्टिवें ई उचित थीक। यदि ई अवरोध किंवा प्रबन्ध नहि हो तँ संभव थीक जे भाषा किछु एहन मोड़ लऽ लियए जाहि सँ ओकर व्यवस्थित विकास क्रमहि बाधित भए जाए। एहि बाधा सँ मर्यादा बनल रहैछ।

(६) प्रवाह अविच्छिन्न, कोनो अन्तिम स्वरूप नहि—जे वस्तु बनि कऽ पूर्ण भए जाइछ ओकर अंतिम स्वरूप होइछ, किंतु भाषाक संबंध मे ई बात नहि अछि। ई कहियो पूर्ण नहि होइछ अर्थात् कहियो नहि कहल जा सकैछ जे अमुक भाषाक अमुक रूप अंतिम थीक। ध्यातव्य जे भाषा सँ तात्पर्य होइछ जीवित भाषा सँ। मृतभाषाक अंतिम रूप तँ अवश्ये अंतिम होइछ किंतु ई बात जीवित भाषा मे नहि अछि। भाषाक प्रकार अविच्छिन्न होइछ। ओकर निरन्तर विकास होइत

रहैछ एवं संगहि ओकर स्वरूप सेहो बदलैत रहैछ तेँ एकर कोनो अंतिम स्वरूप नहि भए सकैछ। 'मृतभाषा' केँ भाषाक संज्ञा नहि देल जा सकैछ।

(७) विकासक प्रवाह कठिनता सँ सरलता दिशि उन्मुख—भाषाक विकासक प्रवाह स्वाभाविक रूपेँ कठिनता सँ सरलता दिशि उन्मुख होइछ। इतिहास एहि विषयक साक्षी अछि। समस्त भाषाक गति एहए रहल अछि। वस्तुतः समाजक प्रकृतिये एहन होइछ जे ओकरा अत्यल्प समय मे अधिकाधिक फलप्राप्तिक आकांक्षा रहैत छैक। भाषा मे सेहो ओकर एहि प्रकृतिक दिग्दर्शन होइत छैक। 'प्रयत्नलाघव'क सिद्धान्त सेहो एही बातक प्रमाण थीक।

आरंभ मे भाषाक स्वरूप स्थूल होइछ परंच आगाँ चलि ओ सूक्ष्म भए जाइछ। विकसित विचार केँ अभिव्यक्तिक लेल सूक्ष्मता प्रयोजनीय थीक। एहि प्रक्रिया केँ सेहो भाषाक सरलीकरणक प्रक्रिया कहल जाइछ। उदाहरण—सत्येन्द्र सँ सतेन्द्र ओ पुनः सतेन। मास्टर ,साहेब' सँ 'मास्सैब आदि।

(८) विकास संयोगात्मक सँ वियोगात्मक ओ पुनः संयोगात्मक दिशि—भाषाक आकृतिमूलक वर्गीकरणक अन्तर्गत दृष्टिगत होइछ भाषाक दू रूप-संयोगात्मक एवं वियोगात्मक। वियोगात्मक मे शब्दक स्वतंत्र सत्ता होइछ। सम्बन्ध-तत्त्व ओ अर्थ-तत्त्व फराक-फराक रहैछ। संयोगात्मक मे संबंध-तत्त्व शब्द मे अर्थ-तत्त्वक संग जुटल रहैछ। भाषाक विकासक ई स्वाभाविक गति अछि जे ई संयोगात्मक सँ वियोगात्मक दिशि जाइछ।

आधुनिक काल मे ई देखबा मे अबैछ जे भाषा पुनः वियोगात्मक सँ संयोगात्मक दिशि जा रहल अछि। विकासक एहि गति केँ किछु गोटे 'भाषा विकास-चक्र'क संज्ञा देलन्हि अछि। उदाहरणार्थ—संस्कृत मे 'गच्छति शब्द, (संयोगात्मक थीक कारण एहि मे अर्थ तत्व ओ सम्बन्ध तत्व जुटल अछि) सँ काज चलि जाइछ, मुदा मैथिली मे जाइत अछि (जे वियोगात्मक थीक, कारण एहि मे अर्थ तत्व ओ सम्बन्ध तत्व पृथक पृथक अछि) प्रयोग मे आओत।

(९) अर्जित सम्पत्ति—मनुष्य अपन चहुदिशिक समाज या वातावरण सँ प्रभावित भए भाषा ग्रहण करैछ। भारत मे उत्पन्न शिशु कनाडा मे रहि अंग्रेजी बाजए लगैछ, ओकर चारू दिशि कनाडाक वातावरण रहैछ। एहि तरहेँ भेड़ियाक बच्चा एक दिशि वातावरणक अभाव मे मानवक कोनो भाषा नहि सीखि सकल एवं दोसर दिशि भेड़ियाक संग रहि ओ ओकरहि ध्वनिक अर्जन अंशतः कए सकल। अस्तु, ई स्पष्ट थीक जे भाषा समीपस्थ लोक-सम्पर्क सँ अर्जित सम्पत्ति थीक।

(१०) स्वतंत्र संरचना (ढाँचा)—बनाबटक संगहि संग प्रत्येक भाषाक स्वतंत्र ढाँचा होइछ। उदाहरणार्थ—गुजराती मे तीन लिंग, हिन्दी मे दू लिंग; हिन्दी मे भूतकालक छह भेद अछि, रूसी मे मात्र दू; संस्कृत मे तीन वचन अछि मुदा हिन्दी मे दू। किछु भाषा मे किछु ध्वनिक संयोग संभव थीक परंच अन्य भाषा मे नहि। कोनो दू भाषाक ढाँचा पूर्णतः एक नहि होइछ। ओहि मे ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य एवं अर्थ आदि मे कोनो स्तर पर अन्तर अवश्य रहैछ। इएह अन्तर ओकर पृथक वा स्वतंत्र सत्ताक कारण बनैछ।

(११) द्वैध रचना—संसारक विभिन्न भाषाक अध्ययन कएला पर एहि मे आधारभूत एकताक किछु तत्त्व देखि पड़ैछ। द्वैध रचना एहि आधारभूत एकताक एक नमूना थीक। द्वैध रचना सँ अर्थ होइछ जे संसारक समस्त भाषाक रचना दू तत्त्व—(i) ध्वनि एवं (ii) शब्द किंवा पद सँ भेल अछि। ई दुनू तत्त्व समस्त भाषा मे कोनो ने कोनो रूप मे अवश्य दृष्टिगत होइछ। एहि मे सँ वाक्यात्मक रचना अथवा पदक आधार पर रचना केँ प्राथमिक एवं ध्वनि प्रक्रियाक आधार पर संरचना केँ द्वितीयक केर संज्ञा देल जाइछ। प्रसिद्ध अंग्रेजी भाषा विद् जॉन लॉयन्सक अनुसारेँ ई संरचना मानव भाषाक विश्वव्यापी आधारभूत विशेषता थीक।

(१२) रूप रचनागत विशिष्टता (वैशिष्ट्य)—भाषाक रूप रचनागत वैशिष्ट्य ओकर स्वतंत्र होयबाक एक अंग मात्र थीक। एकर अर्थ होइछ जे प्रत्येक भाषाक रचना सँ सम्बद्ध विशिष्टता फराक-फराक होइछ। जतए विश्वक अनेक भाषा मे किछु मौलिक एकता होइछ ओतए इहो सत्य थीक जे व्याकरणक नियमक दृष्टिएँ ओहि मे भिन्नता ओ असमानता होइछ। एही रूप रचनागत विशिष्टताक कारणें एक भाषाक पूर्णरूपें अनुवाद विशेषतः क्रिया काल ओ लिंग आदि सम्भव नहि होइछ यथा-द्रष्टव्य थीक मैथिली मे 'सीता खाइत छथि' राम खाइत छथि। ई मैथिलीक अपन विशिष्टता थीक। एहि मे क्रियाक रूप 'सीता' आ 'रामक' संग एकहि रूप मे अछि, मुदा इएह वाक्य जे हिन्दी मे रहैत तऽ 'सीता खाती है' आ 'राम खाता है' होइतैक।

(१३) सृजनात्मकता—नोम चोम्स्की (Noam Chomsky) कहने छथि—"chomsky conciders that the creativity of language is one of the most characteristic features."

अर्थात् सृजनात्मकता भाषाक प्रमुख विशेषता थीक। एकरा भाषाक उन्मुक्तता (open endedness) सेहो कहल जाइछ। सृजनात्मकताक अर्थ होइछ जे ज्ञात ध्वनि अथवा पदक वाक्यक निर्माण करब अथवा भाषाक रचना करब ओ नवीन भाव एवं अर्थ के ग्रहण करब। नवीन वाक्य रचना ओ अर्थग्रहण एही सृजनात्मकताक रूप थीक अथवा सृजनात्मकता परिणाम थीक।

(१४) ऐतिहासिक सीमा—भाषाक ऐतिहासिक सीमा होइछ। प्रत्येक भाषा इतिहासक कोनो निश्चित अवधि सँ आरंभ भए कोनो अवधि धरि प्रयुक्त होइछ एवं ओ भाषा अपन समयक परवर्ती या पूर्ववर्ती भाषा सँ भिन्न कोटिक होइछ। उदाहरणार्थ, प्राकृत भाषाक काल प्रथम ईसवी सँ १०० ई० तक मानल जाइछ। एहि शृंखला मे एहि सँ पूर्व पालि भाषा छल एवं एकर पश्चात् अपभ्रंश; परंच पालि ओ अपभ्रंश प्राकृत सँ सर्वथा भिन्न थीक।

(१५) भौगोलिक सीमा—इतिहासहि सदृश भूगोल सेहो भाषाक भिन्नता के निर्धारित करैछ। प्रत्येक भाषाक एक भौगोलिक सीमा होइछ जाहि मे एकर अपन अस्तित्व रहैछ, ओकर बाहर एकर रूप परिवर्तित भए जाइछ एवं एकरा ठीक सँ लोक बुझियो नहि पबैछ। कथन ठीके छैक 'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी'। वस्तुतः कोनो भाषाक अपन वास्तविक क्षेत्र सीमाक अभ्यन्तरे होइछ।

(१६) पैत्रिक सम्पत्ति नहि—किछु लोकक विश्वास अछि जे भाषा पैत्रिक सम्पत्ति थीक। पिताक भाषा पुत्र के पैत्रिक सम्पत्ति सदृश स्वतहि भेटि जाइछ। परंच ई बात यथार्थ नहि थीक। यदि कोनो भारतीय बच्चा के एके दू वर्षक अवस्था सँ रूस मे पोसल जाय तऽ ओ हिन्दुस्तानी भाषा ने बाजि सकत आ ने बुझिये सकत आ' दोसर दिश रूसी भाषा सएह ओकर अपन भाषा वा मातृभाषा भए जाएत। यदि भाषा पैत्रिक सम्पत्ति होइत तऽ भारतीय बच्चा भारत सँ बाहर कतहु रहि कऽ बिना प्रयासे भारतीय भाषा बाजि सकैत।

(१७) भाषा स्थूलता सँ सूक्ष्मता एवं अप्रौढ़ता सँ प्रौढ़ता दिशि उन्मुख—प्रारंभ मे भाषा स्थूल छल। सूक्ष्म भावक हेतु अथवा विचार के गंभीर रूपें अभिव्यक्त करबाक लेल अपेक्षित सूक्ष्मता ओहि मे नहि छल। क्रमागत ओहि मे सूक्ष्मता अबैत गेलैक। एहि रूपें दिनानुदिन भाषा विकसित होइत रहैछ एवं ओ अप्रौढ़ सँ प्रौढ़ तथा प्रौढ़ सँ प्रौढ़ होइत जा रहल अछि। ई तँ थीक एक सामान्य सिद्धान्त, परंच ई प्रयोग पर सेहो निर्भर करैछ। आजुक मैथिलीक तुलना मे कालुक मैथिली अधिक सूक्ष्म ओ प्रौढ़ होएत मुदा संस्कृतक तुलना मे आजुक मैथिली वा कोनो आन भाषा के सूक्ष्म ओ प्रौढ़ नहि कहल जा सकैछ कारण ओहि अनेक क्षेत्र मे प्रयुक्त भए मैथिली विकसित नहि भेल अछि जाहि मे संस्कृत हजारो वर्ष पूर्व विकसित भए चुकल अछि।

(१२) रूप रचनागत विशेषता (वैशिष्ट्य)—भाषाक रूप रचनागत वैशिष्ट्य ओकर स्वतंत्र ढाँचाक एक अंग मात्र थीक। एकर अर्थ होइछ जे प्रत्येक भाषाक रचना सँ सम्बद्ध विशेषता फराक-फराक होइछ। जतए विश्वक अनेक भाषा मे किछु मौलिक एकता होइछ ओतए इहो सत्य थीक जे व्याकरणक नियमक दृष्टिएँ ओहि मे भिन्नता ओ अलगाव होइछ। एही रूप रचनागत विशेषताक कारणे एक भाषाक पूर्णरूपें अनुवाद विशेषत: क्रिया काल ओ लिंग आदि सम्भव नहि होइछ यथा-द्रष्टव्य थीक मैथिली मे 'सीता खाइत छथि' राम खाइत छथि। ई मैथिलीक अपन विशेषता थीक। एहि मे क्रियाक रूप 'सीता' आ 'रामक' संग एकहि रूप मे आछ, मुदा इएह वाक्य जे हिन्दी मे रहैत तऽ 'सीता खाती है' आ 'राम खाता है' होइतैक।

(१३) सृजनात्मकता—नोम चोम्स्की (Noam Chomsky) कहने छथि—"chomsky conciders that the creativity of language is one of the most characteristic features."

अर्थात् सृजनात्मकता भाषाक प्रमुख विशेषता थीक। एकरा भाषाक उन्मुक्तता (open endidness) सेहो कहल जाइछ। सृजनात्मकताक अर्थ होइछ जे ज्ञात ध्वनि अथवा पदक वाक्यक निर्माण करब अथवा भाषाक रचना करब ओ नवीन भाव एवं अर्थ कें ग्रहण करब। नवीन वाक्य रचना ओ अर्थग्रहण एही सृजनात्मकताक रूप थीक अथवा सृजनात्मकता परिणाम थीक।

(१४) ऐतिहासिक सीमा—भाषाक ऐतिहासिक सीमा होइछ। प्रत्येक भाषा इतिहासक कोनो निश्चित अवधि सँ आरंभ भए कोनो अवधि धरि प्रयुक्त होइछ एवं ओ भाषा अपन समयक परवर्ती या पूर्ववर्ती भाषा सँ भिन्न कोटिक होइछ। उदाहरणार्थ, प्राकृत भाषाक काल प्रथम ईसवी सँ १०० ई० तक मानल जाइछ। एहि शृंखला मे एहि सँ पूर्व पालि भाषा छल एवं एकर पश्चात् अपभ्रंश; परंच पालि ओ अपभ्रंश प्राकृत सँ सर्वथा भिन्न थीक।

(१५) भौगोलिक सीमा—इतिहासहि सदृश भूगोल सेहो भाषाक भिन्नता कें निर्धारित करैछ। प्रत्येक भाषाक एक भौगोलिक सीमा होइछ जाहि मे एकर अपन अस्तित्व रहैछ, ओकर बाहर एकर रूप परिवर्तित भए जाइछ एवं एकरा ठीक सँ लोक बुझियो नहि पबैछ। कथन ठीके छैक 'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी'। वस्तुत: कोनो भाषाक अपन वास्तविक क्षेत्र सीमाक अभ्यन्तरे होइछ।

(१६) पैत्रिक सम्पत्ति नहि—किछु लोकक विश्वास अछि जे भाषा पैत्रिक सम्पत्ति थीक। पिताक भाषा पुत्र कें पैत्रिक सम्पत्ति सदृश स्वतहि भेटि जाइछ। परंच ई बात यथार्थ नहि थीक। यदि कोनो भारतीय बच्चा कें एक दू वर्षक अवस्था सँ रूस मे पोसल जाय तऽ ओ हिन्दुस्तानी भाषा ने बाजि सकत आ ने बुझिये सकत आ' दोसर दिश रूसी भाषा सएह ओकर अपन भाषा वा मातृभाषा भए जाएत। यदि भाषा पैत्रिक सम्पत्ति होइत तऽ भारतीय बच्चा भारत सँ बाहर कतहु रहि कऽ बिना प्रयासे भारतीय भाषा बाजि सकैत।

(१७) भाषा स्थूलता सँ सूक्ष्मता एवं अप्रौढ़ता सँ प्रौढ़ता दिशि उन्मुख—प्रारभ मे भाषा स्थूल छल। सूक्ष्म भावक हेतु अथवा विचार कें गंभीर रूपें अभिव्यक्त करबाक लेल अपेक्षित सूक्ष्मता ओहि मे नहि छल। क्रमागत ओहि मे सूक्ष्मता अबैत गेलैक। एहि रूपें दिनानुदिन भाषा विकसित होइत रहैछ एवं ओ अप्रौढ़ सँ प्रौढ़ तथा प्रौढ़ सँ प्रौढ़ होइत जा रहल अछि। ई तें थीक एक सामान्य सिद्धान्त, परंच ई प्रयोग पर सेहो निर्भर करैछ। आजुक मैथिलीक तुलना मे काल्हुक मैथिली अधिक सूक्ष्म ओ प्रौढ़ होएत मुदा संस्कृतक तुलना मे आजुक मैथिली वा कोनो आन भाषा कें सूक्ष्म ओ प्रौढ़ नहि कहल जा सकैछ कारण ओहि अनेक क्षेत्र मे प्रयुक्त भए मैथिली विकसित नहि भेल अछि जाहि मे संस्कृत हजारों वर्ष पूर्व विकसित भए चुकल अछि।

(१८) स्पष्ट किंवा अस्पष्ट एक मानक रूप—प्रत्येक भाषाक स्पष्ट या अस्पष्ट एक मानक रूप होइछ।

(१९) भाषा सर्वव्यापक—मानवक सभ कार्य-व्यापार भाषा द्वारा व्याप्त ओ परिचालित होइछ। व्यक्ति-व्यक्तिक संबंध किंवा व्यक्ति ओ समाजक संबंध भाषाक बिना संभव नहि। संस्कृतक महान् भाषा वैज्ञानिक भर्तृहरि कहने छथि—

'इति कर्त्तव्यता लोके सर्वा शब्दव्यपाश्रया।'
एवं न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ॥'
—(वाक्यपदीय, ब्रह्मकाण्ड)

लौकिक कर्त्तव्य—बोधक, अर्थात् की कोना करबाक चाही एकर ज्ञान भाषे पर आश्रित थिक। संसार मे कोनो एहन प्रत्यय नहि अछि जे भाषाक बिना संभव हो। समस्त ज्ञान भाषा सँ अनुस्यूत सदृश दृष्टिगत होइछ। अर्थात् मनुष्यक आन्तरिक एवं वाह्य वैयक्तिक ओ सामाजिक एवं अभिव्यंजन समस्त विषय भाषाहिक परिणाम थीक।

(२०) भाषा संप्रेषणक मौखिक साधन—संप्रेषणक अनेक रूप अछि—यथा—सांकेतिक, आंगिक ओ लिखित आदि, एहि मे सँ कोनो केर द्वारा व्यक्ति अपन अभिप्राय दोसरा पर प्रकट कए सकैछ। मुदा ककरो द्वारा वक्तव्यक पूर्ण अभिव्यक्ति संभव नहि अछि। सांकेतिक या आंगिक साधनक अपूर्णता तँ स्पष्टे अछि, लिखित साधन सेहो ओहि सँ उन्मुक्त नहि। उच्चारित भाषा मे ध्वनिक आरोह-अवरोह, व्यंग्य काकु आदिक भाव-भंगिमाक द्वारा जे प्रभाव उत्पन्न होइछ ओ लिखित भाषा मे संभव नहि। जतए उच्चरित भाषा सप्राण होइछ, ओतए लिखित निष्प्राण। पाठक केँ अपना दिशि सँ भाषाक भंगिमा केँ लिखित भाषा पर आरोपित करए पड़ैछ। उदाहरण-स्वरूप, यदि केओ ककरो नाटकीय संदर्भ पढ़ि कए सुनबैत छैक तँ ओ ओही रूप मे ओकरा पढ़ैत अछि जेना पात्र केँ कहबाक छैक। यद्यपि लिखित रूप मे ओकर आरोह-अवरोहक कोनो दिशा निर्देश नहि रहैछ। भाषाक सभ सँ मुख्य उपयोग इएह थीक जे ओकरा बाजि कए परस्पर संप्रेषणक काज लेल जाए, अर्थात् अपन अभिप्रायक अभिव्यक्ति दोसरा तक पहुँचि सकए।

(२१) व्यवहार द्वारा अर्जित—भाषा व्यवहार द्वारा अर्जित होइछ। एकर सर्वोत्तम उदाहरण थीक 'बच्चा'। बच्चा केँ जहिना दूधक घोंट देल जाइछ तहिना भाषाक सेहो। दूध-घोंट स ओकर शारीरिक विकास होइछ, आ भाषाक घोंट सँ बौद्धिक। साधारण शब्द सँ प्रारंभ कए ओ भाषाक मर्म तक क्रमागत बुझबा मे सक्षम भए जाइछ।

भाषा सिखबाक प्रक्रिया मे भारतीय विद्वान लोकनि व्यवहार केँ प्राथमिकता देलन्हि अछि। सिखए वलाक दृष्टिएँ एकरा अनुकरण कहल जाएत, परंच समाजक दृष्टि सँ व्यवहार। बच्चा सामाजिक भाषिक व्यवहारहिक अनुकरण करैछ। प्रारंभ मे बौद्धिक अभाव किंवा भाषण इन्द्रियक समुचित संचालन वा इच्छा सँ संचालनक क्षमता अविकसित होएबाक कारणे अनुकरण अपूर्ण होइछ आ तेँ ने रोटी केँ 'लोती' या ओती, पानि केँ आनि, नानि, 'आप' केँ 'आतू' जूली केँ जूदी, चौआ केँ 'अउआ' आ भाईजी केँ 'आइजी' कहैत अछि। बच्चा द्वारा उच्चारण समुचित रूपेँ नहि भए पबैछ। मुदा, व्यवहारे द्वारा ई अपूर्ण उच्चारण अपूर्ण अनुकरणक फल थीक, क्रमागत पूर्णता तक पहुँचबा मे सक्षम होइछ।

(२२) सहज ओ नैसर्गिक क्रिया—भाषा लोक सिखैत अछि दू रूप मे। पहिल थीक अनुकरण द्वारा आ दोसर बौद्धिक प्रयत्न द्वारा। हम अपन मातृभाषा अनुकरण द्वारा सिखैत छी

आ संस्कृत, जर्मन इटैलिक, अंग्रेजी आदि भाषा बुद्धिक प्रयास द्वारा। भाषाक अर्जन चाहे जाहि कोनो माध्यमे हो ई श्रमसाध्य व्यापार थीक। अन्तर एतबे जे अनुकरणक प्रकिया सँ मनुष्य भाषा तखन सिखैत अछि जखन बुद्धि अविकसित रहैछ। एहि हेतु ओहि समयक श्रम ने तँ ज्ञात होइछ आ ने पश्चात् स्मरणे रहैछ। बौद्धिक विकासक संग अन्य भाषाक कें सिखलाक बाद श्रमक अनुभव होइछ। एही हेतु मातृभाषाक तुलना मे आन भाषा कें सीखब अपेक्षाकृत अधिक श्रमसाध्य थीक।

तात्विक दृष्टिञो दुनू मे कोनो अतर नहि। भाषा चाहे कोनहुना ग्रहण कएल जाए स्वाधिकार मे आबि गेला पर ओ सहज भए जाइछ आ ओकर प्रयोग तखन बिना प्रयासहु करबा मे आसानी होमए लगैछ। जाहि रूपें आंगिक चेष्टा स्वाभाविक ढंगे होइछ तादृशे भाषिक चेष्टा अर्थात् भाषाक प्रयोग सेहो होइछ। एहि रूपें ई सिद्ध होइछ जे भाषा सहज ओ नैसर्गिक थीक।

(२३) **स्थिरीकरण ओ मानकीकरण सँ प्रभावित**—भाषा मे दू टा विरोधी प्रवृति दृष्टिगत होइछ—प्रथम थीक विविधता ओ परिवर्तनक एवं दोसर एकता एवं स्थिरीकरणक !

परिवर्तन भाषाक अनिवार्य क्रम थीक जकर फलस्वरूप भाषा मे वैविध्य आबि जाइछ। एहि रूपें एक युगक भाषा आन युगक भाषा सँ भिन्न रूपक होइछ, परंच यदि परिवर्तनक एहि क्रम पर नियंत्रण नहि राखल जाए तँ एहिमे एकहि पीढ़ी मे भाषाक रूपे परिवर्तित भए विकृत भऽ जाएत। भाषा कें बोधगम्य बनौने रखबाक लेल आवश्यक थीक जे परिवर्तनक क्रम ओ गति नियंत्रण हो। भाषा मे परिवर्तनक प्राकृतिक प्रवृति थीक रूढ़ि सँ ग्रस्त रहबाक, या अपरिवर्तनक सहज मानवीय प्रवृत्ति। परिवर्तन ओ अपरिवर्तनक एहि दुहू प्रवृत्ति मे निरन्तर संघर्ष चलैत अछि।

भाषा नैसर्गिक नियम सँ बदलए चाहैछ एवं मानव ओकरा रोकए चाहैछ। एहि सँ परिवर्तनक कार्य सर्वथा अवरुद्ध तऽ नहिञो होइछ परन्तु ओकर गति क्षीण अवश्य भऽ जाइछ जे भाषाक आपेक्षिक स्थिरता प्रदान करैछ। ई स्थिरता सामाजिक दृष्टिञे अत्यन्त बांछनीय थीक। परम्परा-प्राप्त साहित्य, केन्द्रीय शासन, परिनिष्ठित भाषा द्वारा शिक्षा संचारक सुविधाजनक साधन, समाचार पत्र, सैनिक सेवा, रेडियो आदि भाषाक स्थिरता कें बनओने रहबाक साधन थीक, जतए से नहि अछि ततए भाषा मे परिवर्तनक गति अधिक तेजी सँ देखबा मे अबैछ।

(२४) **पहिने उच्चरित रूप मे परिवर्तन**—भाषा मे परिवर्तन ओकर उच्चरित ओ लिखित दुहू रूप मे होइछ (पहिने होइछ उच्चरिते रूपमे) कारण ई अछि जे लिखित रूप उच्चरिते रूपक सांकेतिक अंकन थीक। उच्चारणहि सदृश लेखन होइत अछि मुदा भाषाक उच्चारित रूप मे परिवर्तन भइयो गेला पर लिखित रूपमे परिवर्तन नहि होइछ। उच्चारणएवं वर्तनीक भेदक इएह कारण थीक। अंग्रेजी मे अद्यपर्यन्त बहुतो एहन शब्दक वर्तनी वएहअछि जे सैकड़ों वर्ष पूर्व मे छल-यथा-Daugheter, Laughter, through आदि, परंच एकर उच्चारण बदललो पर लिखित रूप मे परिवर्तन नहि भेल अछि।